IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

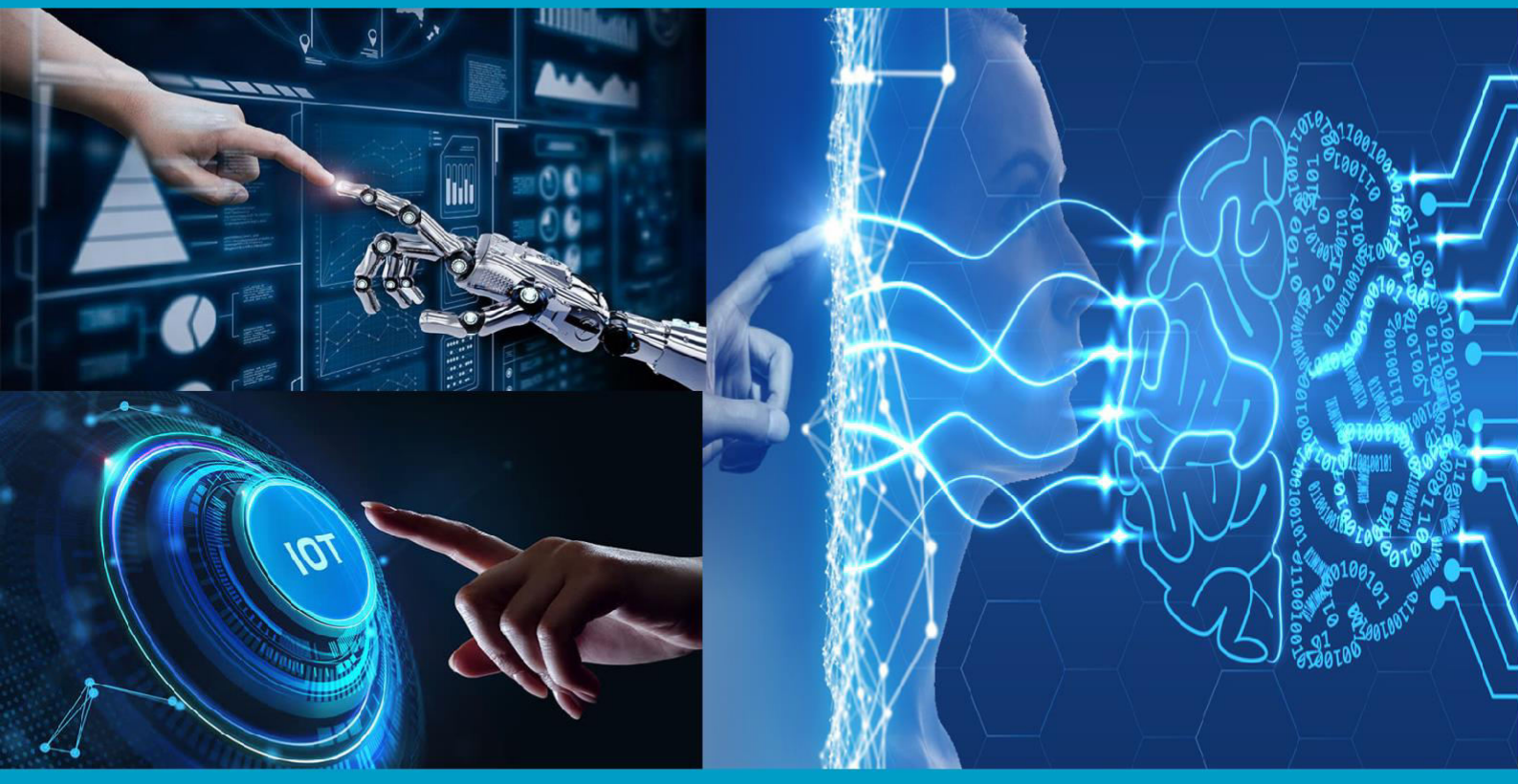

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 11, Issue 7, July 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.802

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 7, July 2024 |

वर्तमान पर्यावरण समस्याओं का ऐतिहासिक अध्ययन

सुनीता फुलवारियाँ

सहायक आचार्य (इतिहास), राजकीय कन्या महाविद्यालय, किशनपोल, जयपुर, राजस्थान

सार: भारत की पर्यावरणीय समस्याओं में विभिन्न प्राकृतिक खतरे, विशेष रूप से चक्रवात और वार्षिक मानसून बाढ़, जनसंख्या वृद्धि, बढ़ती हुई व्यक्तिगत खपत, औद्योगीकरण, ढांचागत विकास, घटिया कृषि पद्धतियां और संसाधनों का असमान वितरण हैं और इनके कारण भारत के प्राकृतिक वातावरण में अत्यधिक मानवीय परिवर्तन हो रहा है।

I. परिचय

पर्यावरणीय इतिहास समय के साथ प्राकृतिक दुनिया के साथ मानव के अंतःक्रिया का अध्ययन है , जो मानव मामलों को प्रभावित करने में प्रकृति की सक्रिय भूमिका पर जोर देता है और इसके विपरीत भी।

पर्यावरण इतिहास पहली बार संयुक्त राज्य अमेरिका में 1960 और 1970 के दशक के पर्यावरण आंदोलन से उभरा , और इसका अधिकांश प्रोत्साहन अभी भी वर्तमान वैश्विक पर्यावरण चिंताओं से उपजा है। [1] इस क्षेत्र की स्थापना संरक्षण के मुद्दों पर की गई थी, लेकिन इसका दायरा व्यापक हो गया है और इसमें अधिक सामान्य सामाजिक और वैज्ञानिक इतिहास शामिल हो सकते हैं और यह शहरों, जनसंख्या या सतत विकास से संबंधित हो सकता है। जैसा कि सभी इतिहास प्राकृतिक दुनिया में घटित होते हैं, पर्यावरण इतिहास विशेष समय-पैमाने, भौगोलिक क्षेत्रों या प्रमुख विषयों पर ध्यान केंद्रित करता है। यह एक दृढ़ता से बहु-विषयक विषय भी है जो मानविकी और प्राकृतिक विज्ञान दोनों पर व्यापक रूप से आधारित है।[1,2,3]

पर्यावरणीय इतिहास की विषय-वस्तु को तीन मुख्य घटकों में विभाजित किया जा सकता है। [२] पहला, प्रकृति स्वयं और समय के साथ इसमें होने वाले परिवर्तन, इसमें पृथ्वी की भूमि , जल , वायुमंडल और जीवमंडल पर मनुष्यों का भौतिक प्रभाव शामिल है। दूसरी श्रेणी, मनुष्य प्रकृति का उपयोग कैसे करते हैं, इसमें बढ़ती आबादी , अधिक प्रभावी तकनीक और उत्पादन और उपभोग के बदलते पैटर्न के पर्यावरणीय परिणाम शामिल हैं। अन्य प्रमुख विषय हैं नवपाषाण क्रांति में खानाबदोश शिकारी-संग्रहकर्ता समुदायों से बसे हुए कृषि में परिवर्तन , औपनिवेशिक विस्तार और बस्तियों के प्रभाव , और औद्योगिक और तकनीकी क्रांतियों के पर्यावरणीय और मानवीय परिणाम। [३] अंत में, पर्यावरण इतिहासकार अध्ययन करते हैं कि लोग प्रकृति के बारे में कैसे सोचते हैं - जिस तरह से दृष्टिकोण , विश्वास और मूल्य प्रकृति के साथ बातचीत को प्रभावित करते हैं, खासकर मिथकों , धर्म और विज्ञान के रूप में ।

नाम की उत्पत्ति और प्रारंभिक कार्य

1967 में, रॉड्रिक नैश ने वाइल्डरनेस एंड द अमेरिकन माइंड प्रकाशित किया , जो कि प्रारंभिक पर्यावरण इतिहास का एक क्लासिक पाठ बन गया है। 1969 में अमेरिकी इतिहासकारों के संगठन को दिए गए एक संबोधन में (1970 में प्रकाशित) नैश ने "पर्यावरण इतिहास" अभिव्यक्ति का इस्तेमाल किया, [4] हालांकि 1972 को आम तौर पर उस तारीख के रूप में लिया जाता है जब इस शब्द को पहली बार गढ़ा गया था। [5] सैमुअल पी. हेज़ की 1959 की पुस्तक , कंजर्वेशन एंड द गॉस्पेल ऑफ़ एफिशिएंसी: द प्रोग्रेसिव कंजर्वेशन मूवमेंट, 1890-1920 , अमेरिकी राजनीतिक इतिहास में एक प्रमुख योगदान होने के साथ-साथ अब पर्यावरण इतिहास के क्षेत्र में एक संस्थापक दस्तावेज़ के रूप में भी माना जाता है। हेज़ पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर एमेरिटस हैं । [6] अल्फ्रेड डब्ल्यू. क्रॉस्बी की पुस्तक द कोलंबियन एक्सचेंज (1972

हिस्टोरिओग्राफ़ी

पर्यावरण इतिहास के इतिहासलेखन का संक्षिप्त अवलोकन जेआर मैकनील , [8] रिचर्ड व्हाइट , [9] और जे डोनाल्ड ह्यूजेस द्वारा प्रकाशित किया गया है । [10] 2014 में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ने द ऑक्सफोर्ड हैंडबुक ऑफ़ एनवायर्नमेंटल हिस्ट्री में 25 निबंधों का एक खंड प्रकाशित किया ।

परिभाषा

पर्यावरण इतिहास की कोई सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत परिभाषा नहीं है। सामान्य शब्दों में यह एक ऐसा इतिहास है जो यह समझाने की कोशिश करता है कि हमारा पर्यावरण ऐसा क्यों है और मानवता ने इसकी वर्तमान स्थिति को कैसे प्रभावित किया है, साथ ही कल की समस्याओं और अवसरों पर टिप्पणी भी करता है। [11] डोनाल्ड वर्स्टर की व्यापक रूप से उद्धृत 1988 की परिभाषा में कहा गया है कि पर्यावरण इतिहास "अतीत में मानव संस्कृतियों और पर्यावरण के बीच की बातचीत" है। [12]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 7, July 2024 |

2001 में, जे. डोनाल्ड ह्यूजेस ने इस विषय को "समय के साथ प्राकृतिक समुदायों के साथ मानवीय रिश्तों का अध्ययन" के रूप में परिभाषित किया, जिसका वे हिस्सा हैं, ताकि उन परिवर्तनों की प्रक्रियाओं को समझाया जा सके जो उस रिश्ते को प्रभावित करते हैं। [13] और, 2006 में, "इतिहास जो समय के साथ लाए गए परिवर्तनों के माध्यम से प्रकृति के बाकी हिस्सों के साथ संबंधों में मनुष्यों के रहने, काम करने और सोचने के तरीके को समझने की कोशिश करता है"। [14] "एक पद्धति के रूप में, पर्यावरण इतिहास मानव इतिहास को समझने के साधन के रूप में पारिस्थितिक विश्लेषण का उपयोग है...मानव समाजों में परिवर्तनों का एक लेखा जोखा, क्योंकि वे प्राकृतिक पर्यावरण में परिवर्तनों से संबंधित हैं"। [13] पर्यावरण इतिहासकारों की रुचि इस बात में भी है कि "लोग प्रकृति के बारे में क्या सोचते हैं, और उन्होंने उन विचारों को लोक धर्मों, लोकप्रिय संस्कृति, साहित्य और कला में कैसे व्यक्त किया है"। [13] 2003 में, जेआर मैकनील ने इसे "मानव जाति और प्रकृति के बाकी हिस्सों के बीच आपसी संबंधों का इतिहास" के रूप में परिभाषित किया। [8]

विषय - वस्तु

पारंपरिक ऐतिहासिक विश्लेषण ने समय के साथ अपने अध्ययन के दायरे को कुछ महत्वपूर्ण लोगों की गतिविधियों और प्रभाव से बढ़ाकर बहुत व्यापक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विश्लेषण तक बढ़ा दिया है। पर्यावरण इतिहास पारंपरिक इतिहास के विषय को और व्यापक बनाता है। 1988 में, डोनाल्ड वर्स्टर ने कहा कि पर्यावरण इतिहास " मानव जीवन में प्रकृति की भूमिका और स्थान " की जांच करके " अपने आख्यानों में इतिहास को और अधिक समावेशी बनाने का प्रयास करता है" [15] , [16] और 1993 में, कि "पर्यावरण इतिहास उन तरीकों की खोज करता है जिनसे जैवभौतिक दुनिया ने मानव इतिहास के पाठ्यक्रम को प्रभावित किया है और जिन तरीकों से लोगों ने अपने परिवेश के बारे में सोचा है और उसे बदलने की कोशिश की है "। [17] परिदृश्यों के निर्माण में मानव और पर्यावरणीय कारकों की अन्योन्याश्रितता सांस्कृतिक परिदृश्य की धारणा के माध्यम से व्यक्त की जाती है । वर्स्टर ने अनुशासन के दायरे पर भी सवाल उठाया, पूछा: "हम मनुष्यों और प्रकृति का अध्ययन करते हैं; इसलिए क्या कोई भी मानवीय या प्राकृतिक चीज हमारी जांच से बाहर हो सकती है? " [18]

पर्यावरण इतिहास को आम तौर पर इतिहास के एक उपक्षेत्र के रूप में माना जाता है । लेकिन कुछ पर्यावरण इतिहासकार इस धारणा को चुनौती देते हैं, यह तर्क देते हुए कि पारंपरिक इतिहास मानव इतिहास है - लोगों और उनके संस्थानों की कहानी, [19] "मनुष्य खुद को प्रकृति के सिद्धांतों से बाहर नहीं रख सकते"। [20] इस अर्थ में, वे तर्क देते हैं कि पर्यावरण इतिहास एक बड़े संदर्भ में मानव इतिहास का एक संस्करण है, जो मानव-केंद्रितता पर कम निर्भर है (भले ही मानवजनित परिवर्तन इसके आख्यान के केंद्र में हो)। [21]

DIMENSIONS

1864 में फंकविले का सामान्य दृश्य, ऑयल क्रीक, पेंसिल्वेनिया, यू.एस.

जे. डोनाल्ड ह्यूजेस ने इस दृष्टिकोण का जवाब दिया कि पर्यावरण का इतिहास "सिद्धांत पर हल्का" है या इसमें सैद्धांतिक संरचना का अभाव है, इस विषय को तीन "आयामों" के लेंस के माध्यम से देखते हुए: प्रकृति और संस्कृति, इतिहास और[4,5,6] विज्ञान, और पैमाना। [22] यह पर्यावरण इतिहासकारों द्वारा संबोधित किए जाने वाले मुद्दों के तीन व्यापक समूहों की वर्स्टर की मान्यता से आगे बढ़ता है, हालांकि दोनों इतिहासकार मानते हैं कि उनकी श्रेणियों का जोर विशेष अध्ययन के अनुसार अलग-अलग हो सकता है [23] क्योंकि, स्पष्ट रूप से, कुछ अध्ययन समाज और मानव मामलों पर और अन्य पर्यावरण पर अधिक ध्यान केंद्रित करेंगे।

विषय-वस्तु

इन ऐतिहासिक आयामों को व्यक्त करने के लिए कई थीम का उपयोग किया जाता है। एक अधिक पारंपरिक ऐतिहासिक दृष्टिकोण नियोलिथिक क्रांति , साम्राज्यवाद और औपनिवेशिक विस्तार , अन्वेषण , कृषि परिवर्तन , औद्योगिक और तकनीकी क्रांति के प्रभाव और शहरी विस्तार के दौरान प्रकृति से मनुष्य के अलगाव जैसे विषयों के माध्यम से दुनिया की पारिस्थितिकी के परिवर्तन का विश्लेषण करना है। अधिक पर्यावरणीय विषयों में वानिकी , आग , जलवायु परिवर्तन , स्थिरता और इतने पर प्रभावों के

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 7, July 2024 |

माध्यम से मानव प्रभाव शामिल हैं। पॉल वार्डे के अनुसार , "उपनिवेशीकरण और प्रवास का तेजी से परिष्कृत इतिहास एक पर्यावरणीय पहलू ले सकता है, जो दुनिया भर में विचारों और प्रजातियों के मार्गों का पता लगाता है और वास्तव में यूरोपीय इतिहास के भीतर प्रक्रियाओं की ऐसी उपमाओं और 'औपनिवेशिक' समझ का अधिक उपयोग कर रहा है।" [24] अफ्रीका, कैरिबियन और हिंद महासागर में औपनिवेशिक उद्यम के महत्व को रिचर्ड ग्रोव ने विस्तृत रूप से बताया है । [3] अधिकांश साहित्य में वैश्विक, राष्ट्रीय और स्थानीय स्तरों पर लक्षित केस-स्टडी शामिल हैं। [25]

पैमाना

हालाँकि पर्यावरण इतिहास पूरी पृथ्वी पर अरबों वर्षों के इतिहास को कवर कर सकता है, लेकिन यह स्थानीय पैमानों और संक्षिप्त समय अवधियों से भी उतना ही चिंतित हो सकता है। [26] कई पर्यावरण इतिहासकार स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय इतिहास से जुड़े हुए हैं। [27] कुछ इतिहासकार अपने विषय को विशेष रूप से मानव इतिहास की अवधि से जोड़ते हैं - "मानव इतिहास में हर समय अवधि" [20] जबकि अन्य पृथ्वी पर मानव उपस्थिति से पहले की अवधि को अनुशासन के वैध हिस्से के रूप में शामिल करते हैं। इयान सिमंस का ग्रेट ब्रिटेन का पर्यावरण इतिहास लगभग 10,000 वर्षों की अवधि को कवर करता है। प्राकृतिक और सामाजिक घटनाओं के बीच समय के पैमाने में अंतर की प्रवृत्ति होती है: पर्यावरण परिवर्तन के कारण जो समय में पीछे तक फैले हुए हैं, उन्हें तुलनात्मक रूप से संक्षिप्त अवधि में सामाजिक रूप से निपटाया जा सकता है। [28]

हालाँकि हर समय पर्यावरणीय प्रभाव विशेष भौगोलिक क्षेत्रों और संस्कृतियों से आगे तक फैल गए हैं, 20वीं और 21वीं सदी की शुरुआत में मानवजनित पर्यावरणीय परिवर्तन ने वैश्विक अनुपात ग्रहण कर लिया है, सबसे प्रमुख रूप से जलवायु परिवर्तन के साथ-साथ बस्तियों, बीमारी के प्रसार और विश्व व्यापार के वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप भी। [29]

इतिहास

योसेमाइट नेशनल पार्क के ग्लेशियर पॉइंट पर प्रकृति संरक्षणवादी जॉन मुइर अमेरिकी राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट (बाएं) के साथ पर्यावरणीय इतिहास के प्रश्न प्राचीन काल से चले आ रहे हैं, जिनमें [३०] चिकित्सा के जनक हिप्पोक्रेट्स भी शामिल हैं, जिन्होंने जोर देकर कहा कि विभिन्न संस्कृतियाँ और मानव स्वभाव उस परिवेश से संबंधित हो सकते हैं जिसमें लोग वायु, जल, स्थान में रहते थे । [३१] इब्न खल्दुन और मोंटेस्क्यू जैसे विविध विद्वानों ने जलवायु को मानव व्यवहार का एक प्रमुख निर्धारक पाया। [३२] ज्ञानोदय के दौरान , पर्यावरण के बारे में जागरूकता बढ़ रही थी और वैज्ञानिकों ने प्राकृतिक इतिहास और चिकित्सा के माध्यम से स्थिरता के विषयों को संबोधित किया[7,8,9]। [३३] हालाँकि, वर्तमान रूप में इस विषय की उत्पत्ति आमतौर पर २०वीं शताब्दी में देखी जाती है।

1929 में फ्रांसीसी इतिहासकारों के एक समूह ने एनालेस नामक पत्रिका की स्थापना की , जो कई मायनों में आधुनिक पर्यावरणीय इतिहास की अग्रदूत थी क्योंकि इसने पर्यावरण और मानव समाज के पारस्परिक वैश्विक प्रभावों को अपने विषय के रूप में लिया था। सभ्यताओं पर भौतिक पर्यावरण के प्रभाव के विचार को इस एनालेस स्कूल ने मानव इतिहास को आकार देने वाले दीर्घकालिक विकास का वर्णन करने के लिए अपनाया था [18] राजनीतिक और बौद्धिक इतिहास से हटकर कृषि, जनसांख्यिकी और भूगोल पर ध्यान केंद्रित किया। एनालेस स्कूल के छात्र इमैनुएल ले रॉय लाडुरी 1950 के दशक में सबसे पहले पर्यावरण इतिहास को अधिक समकालीन रूप में अपनाने वाले थे। [[34] एनालेस स्कूल के सबसे प्रभावशाली सदस्यों में से एक लुसिएन फेवरे (1878-1956) थे

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 7, July 2024 |

इस विषय में सबसे प्रभावशाली अनुभवजन्य और सैद्धांतिक कार्य संयुक्त राज्य अमेरिका में किया गया है, जहाँ शिक्षण कार्यक्रम सबसे पहले उभरे और प्रशिक्षित पर्यावरण इतिहासकारों की एक पीढ़ी अब सक्रिय है। [24] संयुक्त राज्य अमेरिका में पर्यावरण इतिहास अध्ययन के एक स्वतंत्र क्षेत्र के रूप में 1960 और 1970 के दशक के सामान्य सांस्कृतिक पुनर्मूल्यांकन और सुधार के साथ-साथ पर्यावरणवाद, "संरक्षण इतिहास", [35] और कुछ पर्यावरणीय मुद्दों के वैश्विक स्तर के बारे में जागरूकता बढ़ाने के रूप में उभरा। यह काफी हद तक उस समय के इतिहास में प्रकृति का प्रतिनिधित्व करने के तरीके की प्रतिक्रिया थी, जिसने "संस्कृति और प्रौद्योगिकी के विकास को मनुष्यों को प्राकृतिक दुनिया पर निर्भरता से मुक्त करने और उन्हें इसे प्रबंधित करने के साधन प्रदान करने के रूप में चित्रित किया [और] अन्य जीवन रूपों और प्राकृतिक पर्यावरण पर मानव प्रभुत्व का जश्न मनाया, और तकनीकी सुधार और आर्थिक विकास में तेजी लाने की उम्मीद की"। [36] पर्यावरण इतिहासकारों का इरादा एक उत्तर-औपनिवेशिक इतिहासलेखन विकसित करना था जो "अपने आख्यानों में अधिक समावेशी" था। [15]

नैतिक और राजनीतिक प्रेरणा

पर्यावरण इतिहासकारों को नैतिक और राजनीतिक प्रेरणा हेनरी थोरो , जॉन मुइर , एल्डो लियोपोल्ड और रेचल कार्सन जैसे अमेरिकी लेखकों और कार्यकर्ताओं से मिली है। पर्यावरण इतिहास "अक्सर एक नैतिक और राजनीतिक एजेंडे को बढ़ावा देता है, हालांकि यह धीरे-धीरे एक अधिक विद्वतापूर्ण उद्यम बन गया"। [१५] इस क्षेत्र को परिभाषित करने के शुरुआती प्रयास संयुक्त राज्य अमेरिका में रॉड्रिक नैश द्वारा "द स्टेट ऑफ़ एनवायर्नमेंटल हिस्ट्री" में और अन्य कार्यों में सीमांत इतिहासकारों फ्रेडरिक जैक्सन टर्नर , जेम्स मालिन और वाल्टर प्रेस्कॉट वेब द्वारा किए गए थे, जिन्होंने निपटान की प्रक्रिया का विश्लेषण किया था। उनके काम को अधिक विशिष्ट पर्यावरण इतिहासकारों की दूसरी पीढ़ी द्वारा विस्तारित किया गया था जैसे कि अल्फ्रेड क्रॉस्बी , सैमुअल पी। हेस , डोनाल्ड वर्स्टर , विलियम क्रोनन , रिचर्ड व्हाइट , कैरोलिन मर्चेंट , जेआर मैकनील , डोनाल्ड ह्यूजेस और चाड मोंट्री

ब्रिटिश साम्राज्य

हालाँकि 1970 के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका में पर्यावरण इतिहास एक क्षेत्र के रूप में तेज़ी से बढ़ रहा था, लेकिन यह 1990 के दशक में ब्रिटिश साम्राज्य के इतिहासकारों तक ही पहुँचा। [37] [38] [39] ग्रेगरी बार्टन का तर्क है कि पर्यावरणवाद की अवधारणा वानिकी अध्ययनों से उभरी है, और उस शोध में ब्रिटिश साम्राज्यवादी भूमिका पर ज़ोर देते हैं। उनका तर्क है कि 1900 के आसपास भारत में शाही वानिकी आंदोलन में सरकारी आरक्षण, अग्नि सुरक्षा के नए तरीके और राजस्व-उत्पादक वन प्रबंधन पर ध्यान देना शामिल था। परिणाम ने रोमांटिक संरक्षणवादियों और अहस्तक्षेप करने वाले व्यवसायियों के बीच लड़ाई को आसान बना दिया, इस प्रकार समझौता हुआ जिससे आधुनिक पर्यावरणवाद उभरा। [40]

हाल के वर्षों में जेम्स बीट्टी द्वारा उद्धृत कई विद्वानों ने साम्राज्य के पर्यावरणीय प्रभाव की जांच की है। [४१] बेइनार्ट और ह्यूजेस का तर्क है कि 18वीं और 19वीं शताब्दियों में नए पौधों की खोज और वाणिज्यिक या वैज्ञानिक उपयोग एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय था। बांधों और सिंचाई परियोजनाओं के माध्यम से नदियों का कुशल उपयोग कृषि उत्पादकता बढ़ाने का एक महंगा लेकिन महत्वपूर्ण तरीका था। प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करने के अधिक कुशल तरीकों की खोज करते हुए, अंग्रेजों ने दुनिया भर में वनस्पतियों, जीवों और वस्तुओं को स्थानांतरित किया, जिसके परिणामस्वरूप कभी-कभी पारिस्थितिक व्यवधान और कट्टरपंथी पर्यावरणीय परिवर्तन हुए। साम्राज्यवाद ने प्रकृति के प्रति अधिक आधुनिक दृष्टिकोण को भी प्रेरित किया और वनस्पति विज्ञान और कृषि अनुसंधान को सब्सिडी दी। [४२] विद्वानों ने परस्पर जुड़े, व्यापक सामाजिक और पर्यावरणीय प्रक्रियाओं की जांच के लिए एक लेंस के रूप में पारिस्थितिक-सांस्कृतिक नेटवर्क [10,11,12]की नई अवधारणा की उपयोगिता की जांच करने के लिए ब्रिटिश साम्राज्य का उपयोग किया है। [४३]

वर्तमान अभ्यास

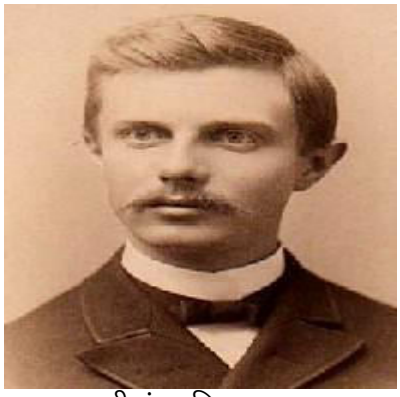

सीमांत इतिहासकार
फ्रेडरिक जैक्सन टर्नर (1861-1932)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 7, July 2024 |

संयुक्त राज्य अमेरिका में अमेरिकन सोसाइटी फॉर एनवायर्नमेंटल हिस्ट्री की स्थापना 1977 में की गई थी, जबकि यूरोप में पर्यावरण के इतिहास को समर्पित पहला संस्थान 1991 में स्थापित किया गया था, जो स्कॉटलैंड के सेंट एंड्रयूज विश्वविद्यालय में स्थित था। 1986 में, पर्यावरण और स्वच्छता के इतिहास के लिए डच फाउंडेशन नेट वर्क की स्थापना की गई और यह प्रति वर्ष चार समाचार पत्र प्रकाशित करता है। यूके में कैम्ब्रिज में व्हाइट हॉर्स प्रेस ने 1995 से, पर्यावरण और इतिहास पत्रिका प्रकाशित की है , जिसका उद्देश्य मानविकी और जैविक विज्ञान में विद्वानों को वर्तमान पर्यावरणीय समस्याओं पर दीर्घकालिक और अच्छी तरह से स्थापित दृष्टिकोणों के निर्माण में एक साथ लाना है और इसी तरह का एक प्रकाशन Tijdschrift voor Ecologische Geschiedenis (पर्यावरण इतिहास के लिए जर्नल) एक संयुक्त फ्लेमिश-डच पहल है कनाडा में नेटवर्क इन कैनेडियन हिस्ट्री एंड एनवायरनमेंट कई कार्यशालाओं और उनकी वेबसाइट और पॉडकास्ट सहित एक महत्वपूर्ण डिजिटल बुनियादी ढांचे के माध्यम से पर्यावरण इतिहास के विकास की सुविधा प्रदान करता है। [४४]

यूरोपीय देशों के बीच संचार भाषा संबंधी कठिनाइयों के कारण सीमित है। अप्रैल 1999 में इन समस्याओं को दूर करने और यूरोप में पर्यावरण इतिहास का समन्वय करने के लिए जर्मनी में एक बैठक आयोजित की गई थी। इस बैठक के परिणामस्वरूप 1999 में पर्यावरण इतिहास के लिए यूरोपीय सोसायटी का निर्माण हुआ। अपनी स्थापना के केवल दो साल बाद, ESEH ने स्कॉटलैंड के सेंट एंड्रयूज में अपना पहला अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। बैठक में लगभग 120 विद्वानों ने भाग लिया और पर्यावरण इतिहास के पूरे स्पेक्ट्रम को कवर करने वाले विषयों पर 105 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। सम्मेलन ने दिखाया कि पर्यावरण इतिहास यूरोप में एक व्यवहार्य और जीवंत क्षेत्र है और तब से ESEH का विस्तार 400 से अधिक सदस्यों तक हो गया है और यह लगातार बढ़ रहा है और 2003 और 2005 में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों को आकर्षित कर रहा है। 1999 में स्टर्लिंग विश्वविद्यालय में पर्यावरण इतिहास केंद्र की स्थापना की गई थी। यूरोपीय विश्वविद्यालयों में कुछ इतिहास विभाग अब पर्यावरण इतिहास में परिचयात्मक पाठ्यक्रम प्रदान कर रहे हैं और नॉटिंघम, स्टर्लिंग और डंडी विश्वविद्यालयों में पर्यावरण इतिहास में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम स्थापित किए गए हैं और हाल ही में जर्मनी के गौटिंगेन विश्वविद्यालय में ग्रैडुइएरटेन कोलेग बनाया गया है। [४५] २००९ में, राहेल कार्सन सेंटर फॉर एनवायरनमेंट एंड सोसाइटी (आरसीसी), पर्यावरण मानविकी और सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान और शिक्षा के लिए एक अंतरराष्ट्रीय, अंतःविषय केंद्र, म्यूनिख के लुडविग-मैक्सिमिलियंस-यूनिवर्सिटी और ड्यूश म्यूजियम की संयुक्त पहल के रूप में स्थापित किया गया था, जिसमें जर्मन संघीय शिक्षा और अनुसंधान मंत्रालय का उदार समर्थन था। [४६] पर्यावरण और समाज पोर्टल (environmentandsociety.org) राहेल कार्सन सेंटर का ओपन एक्सेस डिजिटल संग्रह और प्रकाशन मंच है। [४७]

संबंधित विषय

पर्यावरण इतिहास कला और प्राकृतिक विज्ञान के बीच की खाई को पाटने में गर्व महसूस करता है, हालांकि आज तक तराजू विज्ञान के पक्ष में है। संबंधित विषयों की एक निश्चित सूची वास्तव में लंबी होगी और विशेष उल्लेख के लिए उन्हें अलग करना एक कठिन कार्य होगा। हालाँकि, अक्सर उद्धृत किए जाने वाले विषयों में ऐतिहासिक भूगोल , विज्ञान का इतिहास और दर्शन , प्रौद्योगिकी का इतिहास और जलवायु विज्ञान शामिल हैं । जैविक पक्ष में, सबसे ऊपर, पारिस्थितिकी और ऐतिहासिक पारिस्थितिकी है, लेकिन वानिकी और विशेष रूप से वन इतिहास , पुरातत्व और नृविज्ञान भी हैं । जब विषय पर्यावरण वकालत में संलग्न होता है तो इसमें पर्यावरणवाद के साथ बहुत कुछ समान होता है ।

बढ़ते वैश्वीकरण और संसाधन वितरण पर वैश्विक व्यापार के प्रभाव के साथ, कभी न खत्म होने वाली आर्थिक वृद्धि और कई मानवीय असमानताओं पर चिंता, पर्यावरणीय इतिहास अब पारिस्थितिक और पर्यावरण अर्थशास्त्र के क्षेत्र में सहयोगियों को प्राप्त कर रहा है। [48] [49]

समाजशास्त्रीय विचारकों और मानविकी के साथ जुड़ाव सीमित है, लेकिन मानवीय क्रियाकलापों को निर्देशित करने वाले विश्वासों और विचारों के माध्यम से इसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता है। इसे पारंपरिक इतिहासकारों से समर्थन की कथित कमी का कारण माना जाता है। [24]

समस्याएँ

इस विषय पर कई क्षेत्रों में जीवंत बहस चल रही है। इनमें निम्नलिखित विषयों पर चर्चा शामिल है: कौन सी विषयवस्तु सबसे उपयुक्त है; क्या पर्यावरण वकालत विद्वानों की निष्पक्षता को कम कर सकती है; ऐसे विषय में व्यावसायिकता के मानक जहां गैर-इतिहासकारों द्वारा बहुत उत्कृष्ट कार्य किया गया है; इतिहास के मार्ग को निर्धारित करने में प्रकृति और मनुष्यों का सापेक्ष योगदान; अन्य विषयों - लेकिन विशेष रूप से मुख्यधारा के इतिहास के साथ संबंध और स्वीकृति की डिग्री। पॉल वार्डे के लिए पर्यावरण इतिहास के प्रयास का विशाल पैमाना, दायरा और फैलाव एक विश्लेषणात्मक टूलकिट "सामूहिक रूप से आगे बढ़ने के लिए सामान्य मुद्दों और प्रश्नों की एक श्रृंखला" और एक "मुख्य समस्या" की मांग करता है। वह इसके ग्रंथों में "मानव एजेंसी" की कमी देखता है और सुझाव देता है कि इसे कार्य करने के लिए और अधिक लिखा जाना चाहिए: पर्यावरण वैज्ञानिकों के लिए जानकारी के रूप में; जोखिम की धारणा को शामिल करना; "पर्यावरण" से हमारा क्या मतलब है, इसका एक करीबी विश्लेषण; पर्यावरण इतिहास जिस तरह से मानविकी के साथ असंगत है, उसका सामना करना क्योंकि यह "मानव व्यवहार के लिए भौतिकवादी, और सांस्कृतिक या रचनात्मक स्पष्टीकरण" के बीच विभाजन पर जोर देता है। [50]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 7, July 2024 |

वैश्विक स्थिरता[13,14,15]

स्थिरता प्राप्त करने से पृथ्वी मानव जीवन को सहारा देना जारी रख सकेगी, जैसा कि हम जानते हैं। ब्लू मार्बल नासा संयुक्त चित्र: 2001 (बाएं), 2002 (दाएं)

पर्यावरण इतिहास के कई विषय अनिवार्य रूप से उन परिस्थितियों की जांच करते हैं जिन्होंने वर्तमान समय की पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म दिया है, ऐसे विषयों की एक सूची जो वैश्विक स्थिरता को चुनौती देती है, जिसमें शामिल हैं: जनसंख्या , उपभोक्तावाद और भौतिकवाद , जलवायु परिवर्तन , अपशिष्ट निपटान , वनों की कटाई और जंगलों का नुकसान, औद्योगिक कृषि , प्रजातियों का विलुप्त होना , प्राकृतिक संसाधनों की कमी, आक्रामक जीव और शहरी विकास । [५१] नवीकरणीय संसाधनों के सतत उपयोग का सरल संदेश अक्सर दोहराया जाता है और १८६४ की शुरुआत में जॉर्ज पर्किन्स मार्श यह बता रहे थे कि पर्यावरण में हम जो बदलाव करते हैं, वे बाद में मनुष्यों के लिए पर्यावरण की उपयोगिता को कम कर सकते हैं, इसलिए कोई भी बदलाव बहुत सावधानी से किया जाना चाहिए [५२] - जिसे हम आजकल प्रबुद्ध स्वार्थ कहेंगे । रिचर्ड ग्रोव ने बताया है कि "राज्य पर्यावरणीय गिरावट को रोकने के लिए तभी कार्य करेंगे जब उनके आर्थिक हितों को खतरा होगा"। [५३]
वकालत

यह स्पष्ट नहीं है कि पर्यावरण इतिहास को नैतिक या राजनीतिक एजेंडे को बढ़ावा देना चाहिए। पर्यावरणवाद, संरक्षण और स्थिरता द्वारा उठाई गई मजबूत भावनाएँ ऐतिहासिक निष्पक्षता में बाधा डाल सकती हैं: विवादास्पद ग्रंथ और मजबूत वकालत निष्पक्षता और व्यावसायिकता से समझौता कर सकती है। राजनीतिक प्रक्रिया से जुड़ने के निश्चित रूप से अपने अकादमिक जोखिम हैं [54] हालांकि ऐतिहासिक पद्धति के प्रति सटीकता और प्रतिबद्धता को पर्यावरणीय भागीदारी से खतरा नहीं है: पर्यावरण इतिहासकारों को उचित उम्मीद है कि उनका काम नीति-निर्माताओं को सूचित करेगा। [55]

हाल ही में हुए इतिहासलेखन में बदलाव ने पर्यावरण इतिहास के एक तत्व के रूप में असमानता पर अधिक जोर दिया है। संसाधनों, उद्योग और राजनीति में शक्ति के असंतुलन के परिणामस्वरूप औद्योगिक प्रदूषण का बोझ भौगोलिक और सामाजिक दोनों क्षेत्रों में कम शक्तिशाली आबादी पर स्थानांतरित हो गया है। [56] इस ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से पारंपरिक पर्यावरणवादी आंदोलन की एक आलोचनात्मक परीक्षा उन तरीकों पर ध्यान देती है, जिनसे पर्यावरणवाद के शुरुआती अधिवक्ताओं ने मध्यम वर्ग के स्थानों के सौंदर्य संरक्षण की मांग की और अपने समुदायों को वायु और जल प्रदूषण के सबसे बुरे प्रभावों से बचाया, जबकि कम विशेषाधिकार प्राप्त लोगों की दुर्दशा की उपेक्षा की।

कम आर्थिक और सामाजिक-राजनीतिक शक्ति वाले समुदायों में अक्सर पर्यावरण वकालत में शामिल होने के लिए संसाधनों की कमी होती है। पर्यावरण इतिहास तेजी से उन तरीकों को उजागर करता है जिसमें मध्यम वर्ग के पर्यावरण आंदोलन कम पड़ गए हैं और पूरे समुदायों को पीछे छोड़ दिया है। अंतःविषय अनुसंधान अब ऐतिहासिक असमानता को एक लेंस के रूप में समझता है जिसके माध्यम से पर्यावरण के क्षेत्र में भविष्य के सामाजिक विकास की भविष्यवाणी की जा सकती है, विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन के संबंध में । संयुक्त राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक मामलों के विभाग ने चेतावनी दी है कि एक गर्म ग्रह पर्यावरण और अन्य असमानताओं को बढ़ाएगा, विशेष रूप से निम्नलिखित के संबंध में: "(ए) जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों के लिए वंचित समूहों के जोखिम में वृद्धि; (बी) जलवायु परिवर्तन से होने वाले नुकसान के प्रति उनकी संवेदनशीलता में वृद्धि; और (सी) हुए नुकसान से निपटने और उबरने की उनकी क्षमता में कमी।" [16,17]

पतनवादी आख्यान
पर्यावरण इतिहास के आख्यान वही होते हैं जिन्हें विद्वान "पतनवादी" कहते हैं, अर्थात, मानव गतिविधि के तहत बढ़ती गिरावट का विवरण। [58] दूसरे शब्दों में, "पतनवादी" इतिहास "खोया हुआ स्वर्ण युग" आख्यान का एक रूप है जो प्राचीन काल से मानव विचार में बार-बार प्रकट होता रहा है। [59]

वर्तमानवाद और दोषसिद्धि
"वर्तमानवाद" के आरोप के तहत कभी-कभी यह दावा किया जाता है कि 20वीं सदी के उत्तरार्ध में पर्यावरणवाद और संरक्षण के मुद्दों में इसकी उत्पत्ति के साथ, पर्यावरण इतिहास केवल समकालीन समस्याओं की प्रतिक्रिया है, "बीसवीं सदी के उत्तरार्ध के विकास

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 7, July 2024 |

और चिंताओं को पिछले ऐतिहासिक काल में वापस पढ़ने का प्रयास है जिसमें वे सक्रिय नहीं थे, और निश्चित रूप से उस समय के दौरान मानव प्रतिभागियों के प्रति सचेत नहीं थे"। [60] यह दोषसिद्धि के विचार से दृढ़ता से संबंधित है। पर्यावरणीय बहस में दोष हमेशा विभाजित किया जा सकता है, लेकिन भविष्य के लिए चर्चा के तहत अवधि के मूल्यों और अनिवार्यताओं को समझना अधिक रचनात्मक है ताकि कारणों का निर्धारण किया जा सके और संदर्भ को समझाया जा सके। [61]

पर्यावरण नियतिवाद

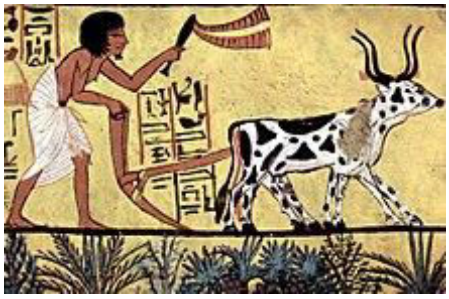

प्राचीन मिस्र में हल चलाता किसान। कारीगर सेनेडेजेम के दफ़न कक्ष में भित्ति चित्र , लगभग 1200 ई.पू.

कुछ पर्यावरण इतिहासकारों के लिए "पर्यावरण की सामान्य परिस्थितियाँ, भूमि और समुद्र का पैमाना और व्यवस्था, संसाधनों की उपलब्धता, और पालतू बनाने के लिए उपलब्ध जानवरों की मौजूदगी या अनुपस्थिति, और संबंधित जीव और रोग वाहक, जो मानव संस्कृतियों के विकास को संभव बनाते हैं और यहाँ तक कि उनके विकास की दिशा को भी पूर्वनिर्धारित करते हैं" [62] और यह कि "इतिहास अनिवार्य रूप से उन ताकतों द्वारा निर्देशित होता है जो मानव मूल की नहीं हैं या मानव पसंद के अधीन नहीं हैं"। [63] इस दृष्टिकोण का श्रेय अमेरिकी पर्यावरण इतिहासकारों वेब और टर्नर [64] और हाल ही में जेरेड डायमंड को उनकी पुस्तक गन्स, जर्म्स, एंड स्टील में दिया गया है, जहाँ रोग वाहकों और पौधों और जानवरों जैसे संसाधनों की मौजूदगी या अनुपस्थिति जो पालतू बनाने के लिए उपयुक्त हैं, न केवल मानव संस्कृति के विकास को उत्तेजित कर सकती हैं बल्कि कुछ हद तक उस विकास की दिशा भी निर्धारित कर सकती हैं। यह दावा कि इतिहास का मार्ग सांस्कृतिक ताकतों के बजाय पर्यावरणीय ताकतों द्वारा गढ़ा गया है, पर्यावरणीय नियतिवाद के रूप में संदर्भित किया जाता है , जबकि दूसरी ओर, जिसे सांस्कृतिक नियतिवाद कहा जा सकता है । सांस्कृतिक नियतिवाद का एक उदाहरण यह दृष्टिकोण होगा कि मानव प्रभाव इतना व्यापक है कि प्राचीन प्रकृति के विचार की वैधता बहुत कम है - कि संस्कृति के बिना प्रकृति से संबंधित होने का कोई तरीका नहीं है। [६५]

क्रियाविधि

ऐतिहासिक घटनाओं का अभिलेखन

पर्यावरणीय इतिहास करने की प्रक्रिया पर उपयोगी मार्गदर्शन डोनाल्ड वर्स्टर [66] कैरोलिन मर्चेंट, [67] विलियम क्रोनन [68] और इयान सिमंस द्वारा दिया गया है । [69] वर्स्टर के तीन मुख्य विषय क्षेत्र (पर्यावरण स्वयं, पर्यावरण पर मानव प्रभाव और पर्यावरण के बारे में मानव विचार) आमतौर पर छात्र के लिए एक शुरुआती बिंदु के रूप में लिया जाता है क्योंकि वे आवश्यक कई अलग-अलग कौशलों को शामिल करते हैं। उपकरण इतिहास और विज्ञान दोनों के हैं, जिनमें प्राकृतिक विज्ञान और विशेष रूप से पारिस्थितिकी की भाषा में प्रवाह की आवश्यकता होती है। [70] वास्तव में भौतिक और सामाजिक विज्ञानों की एक श्रृंखला से कार्यप्रणाली और अंतर्दृष्टि की आवश्यकता होती है, इस बात पर सार्वभौमिक सहमति प्रतीत होती है कि पर्यावरणीय इतिहास वास्तव में एक बहु-विषयक विषय है।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 7, July 2024 |

II. विचार-विमर्श

पर्यावरण प्राकृतिक और मानव निर्मित परिवेश है जो पृथ्वी पर जीवन को प्रभावित करता है और बनाए रखता है। पर्यावरण विभिन्न भौतिक, रासायनिक और जैविक घटकों से बना है जो एक दूसरे के साथ और मानवीय गतिविधियों के साथ परस्पर क्रिया करते हैं। पर्यावरण सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारकों से भी प्रभावित होता है जो मानव मूल्यों, दृष्टिकोणों, व्यवहारों और संस्थानों को आकार देते हैं। पर्यावरण अध्ययन एक अकादमिक क्षेत्र है जो पर्यावरण और उसके मुद्दों का बहु-विषयक और समग्र दृष्टिकोण से व्यवस्थित रूप से अध्ययन करता है। पर्यावरण अध्ययन पर्यावरणीय समस्याओं के कारणों, परिणामों और समाधानों को समझने, उनका विश्लेषण करने, उनका मूल्यांकन करने और उनका समाधान करने के लिए प्राकृतिक विज्ञान, मानविकी और सामाजिक विज्ञान से ज्ञान को एकीकृत करता है।
इस ब्लॉग में हम पर्यावरण अध्ययन का अर्थ, पर्यावरण अध्ययन की परिभाषा, पर्यावरण अध्ययन की पृष्ठभूमि और दायरा, पर्यावरण अध्ययन का महत्व आदि पर चर्चा करेंगे।

अर्थ एवं परिभाषाएँ- पर्यावरण अध्ययन क्या है?
हम पर्यावरण अध्ययन को क्षेत्र के संदर्भ और परिप्रेक्ष्य के आधार पर अलग-अलग तरीकों से परिभाषित कर सकते हैं। हालाँकि, अधिकांश परिभाषाओं में साझा किए जाने वाले कुछ सामान्य तत्व पर्यावरण अध्ययन की बहु-विषयक, समग्र और मानव-उन्मुख प्रकृति हैं। पर्यावरण अध्ययन को कैसे परिभाषित किया जा सकता है, इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

"पर्यावरण अध्ययन एक अंतःविषय क्षेत्र है जो मानव और प्राकृतिक प्रणालियों के बीच अंतःक्रियाओं को समझने और प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन और संरक्षण के लिए रणनीतियों को विकसित करने का प्रयास करता है, जो मानव और ग्रह दोनों के स्वास्थ्य और कल्याण को बनाए रखता है।" - ईओ विल्सन, जीवविज्ञानी और संरक्षणवादी

"पर्यावरण अध्ययन का मतलब सिर्फ़ पर्यावरण का अध्ययन करना नहीं है, बल्कि दुनिया को बदलना है। इसका मतलब है यह पहचानना कि हम प्राकृतिक दुनिया का हिस्सा हैं, उससे अलग नहीं हैं, और हमारे कामों का असर ग्रह और उसके सभी निवासियों के स्वास्थ्य और कल्याण पर पड़ता है।" - डेविड सुजुकी, वैज्ञानिक और पर्यावरण कार्यकर्ता

पर्यावरण अध्ययन की पृष्ठभूमि और दायरा
पर्यावरण अध्ययन 20वीं सदी के मध्य में अध्ययन के एक अलग क्षेत्र के रूप में उभरा, जो औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, जनसंख्या वृद्धि और उपभोग जैसी मानवीय गतिविधियों के पर्यावरणीय प्रभावों और चुनौतियों के बारे में बढ़ती जागरूकता और चिंता का परिणाम था। पर्यावरण अध्ययन पर्यावरण आंदोलन के उद्भव और पर्यावरणीय मुद्दों के सामाजिक और नैतिक आयामों की मान्यता के जवाब के रूप में भी विकसित हुआ। पर्यावरण अध्ययन मानविकी और सामाजिक विज्ञान की एक शाखा के रूप में विकसित हुआ, जिसका उद्देश्य मानव-पर्यावरण संबंध और पर्यावरणीय निर्णय लेने और शासन प्रक्रियाओं को आकार देने वाले मूल्यों, दृष्टिकोणों, व्यवहारों और संस्थानों की खोज करना था।

पर्यावरण अध्ययन का दायरा बहुत व्यापक और विविध है, क्योंकि इसमें पर्यावरण और स्थिरता से संबंधित विभिन्न विषयों और थीम को शामिल किया गया है। पर्यावरण अध्ययन के कुछ प्रमुख विषय और थीम इस प्रकार हैं:

- पर्यावरण विज्ञान: प्राकृतिक पर्यावरण और उसके घटकों, प्रक्रियाओं और अंतःक्रियाओं का अध्ययन।
- पर्यावरणीय नैतिकता: नैतिक सिद्धांतों और मूल्यों का अध्ययन जो मानव-पर्यावरण संबंध और पर्यावरणीय कार्यों और नीतियों का मार्गदर्शन करते हैं।
- पर्यावरण नीति: विभिन्न स्तरों और क्षेत्रों पर पर्यावरण प्रबंधन और संरक्षण को नियंत्रित करने वाले नियमों, विनियमों और योजनाओं का अध्ययन।
- पर्यावरण कानून: कानूनी ढांचे और उपकरणों का अध्ययन जो विभिन्न अभिनेताओं और हितधारकों के पर्यावरणीय अधिकारों और जिम्मेदारियों को विनियमित करते हैं।
- पर्यावरण शिक्षा: विभिन्न समूहों और व्यक्तियों की पर्यावरण जागरूकता, ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण को बढ़ावा देने वाली विधियों और रणनीतियों का अध्ययन।[18,19]

पर्यावरण अध्ययन की प्रकृति
पर्यावरण अध्ययन एक बहुविषयक क्षेत्र है जो मनुष्यों और प्राकृतिक पर्यावरण के बीच की अंतःक्रियाओं से संबंधित है। यह पर्यावरण और मानव कल्याण को प्रभावित करने वाली भौतिक, जैविक, सामाजिक और आर्थिक प्रक्रियाओं के विभिन्न पहलुओं को शामिल करता है। पर्यावरण अध्ययन का उद्देश्य वैज्ञानिक तरीकों और नैतिक सिद्धांतों का उपयोग करके पर्यावरणीय समस्याओं को समझना, उनका विश्लेषण करना और उनका समाधान करना है।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 7, July 2024 |

पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्य

पर्यावरण अध्ययन का मुख्य उद्देश्य जागरूकता पैदा करना, ज्ञान प्रदान करना, दृष्टिकोण विकसित करना, भागीदारी को प्रेरित करना और प्रकृति के साथ सामंजस्य को बढ़ावा देना है। पर्यावरण अध्ययन लोगों को पर्यावरण के मुद्दों और चुनौतियों के बारे में शिक्षित करने, उन्हें प्रासंगिक जानकारी और कौशल प्रदान करने, पर्यावरण के लिए चिंता और जिम्मेदारी की भावना पैदा करने, पर्यावरण संरक्षण और सुधार के लिए कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करने और संसाधनों के एक स्थायी और न्यायसंगत उपयोग को बढ़ावा देने में मदद करता है।

पर्यावरण अध्ययन के दृष्टिकोण

पर्यावरण अध्ययन के लिए अलग-अलग दृष्टिकोण हैं, जो अध्ययन के परिप्रेक्ष्य, फोकस और कार्यप्रणाली पर निर्भर करते हैं। कुछ सामान्य दृष्टिकोण पर्यावरण नियतात्मक, उद्देश्यवादी, संभावनावादी, प्रणाली, समग्र और अंतःविषय हैं। पर्यावरण नियतात्मक दृष्टिकोण मानव गतिविधियों और परिणामों पर पर्यावरण के प्रभाव पर जोर देता है। उद्देश्यवादी दृष्टिकोण पर्यावरण पर मानव क्रियाओं के उद्देश्य और लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करता है। संभावनावादी दृष्टिकोण विभिन्न पर्यावरणीय सेटिंग्स में मनुष्यों के लिए उपलब्ध विकल्पों और अवसरों पर विचार करता है। सिस्टम दृष्टिकोण पर्यावरण को परस्पर संबंधित घटकों और प्रक्रियाओं की एक जटिल और गतिशील प्रणाली के रूप में देखता है। समग्र दृष्टिकोण पर्यावरण के भौतिक, जैविक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं को एकीकृत करता है। अंतःविषय दृष्टिकोण पर्यावरणीय मुद्दों को संबोधित करने के लिए विभिन्न विषयों के ज्ञान और तरीकों को जोड़ता है।

पर्यावरण अध्ययन के घटक

पर्यावरण अध्ययन के घटक जैविक और अजैविक कारक हैं जो पर्यावरण का निर्माण करते हैं। जैविक कारक जीवित जीव हैं, जैसे पौधे, जानवर और सूक्ष्मजीव, जो एक दूसरे और पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया करते हैं।

अजैविक कारक वे निर्जीव तत्व हैं, जैसे हवा, पानी, मिट्टी, खनिज, सूरज की रोशनी, तापमान और जलवायु, जो जैविक कारकों को प्रभावित करते हैं। जैविक और अजैविक कारक पारिस्थितिकी तंत्र की संरचना और कार्य बनाते हैं, जो पर्यावरण अध्ययन की मूल इकाई है।

पर्यावरण अध्ययन में भूमि संसाधन भूमि संसाधन प्राकृतिक संसाधन हैं जो भूमि से प्राप्त होते हैं, जैसे मिट्टी, खनिज, फसलें, जंगल, वन्यजीव और पानी। भूमि संसाधन मानव अस्तित्व, विकास और कल्याण के लिए आवश्यक हैं। हालाँकि, भूमि संसाधन मानवीय गतिविधियों, जैसे कृषि, खनन, शहरीकरण, वनों की कटाई और प्रदूषण के कारण गिरावट, कमी और संघर्ष के अधीन भी हैं। पर्यावरण अध्ययन भूमि संसाधनों के उपयोग, प्रबंधन और संरक्षण के साथ-साथ पर्यावरण और समाज पर उनके प्रभावों की जाँच करता है।

पर्यावरण विकास और स्थिरता

पर्यावरण विकास और स्थिरता ऐसी अवधारणाएँ हैं जो पर्यावरण को सामाजिक-आर्थिक विकास और मानवता के भविष्य से जोड़ती हैं। पर्यावरण विकास पर्यावरण की गुणवत्ता से समझौता किए बिना लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने की प्रक्रिया है।
संधारणीयता वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करने का सिद्धांत है, बिना भावी पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए। पर्यावरण अध्ययन पर्यावरण, विकास और संधारणीयता के बीच अंतर्क्रियाओं, समझौतों और तालमेल का पता लगाता है, और उन्हें प्राप्त करने के तरीके और साधन खोजने का प्रयास करता है।

पर्यावरण अध्ययन और आपदा प्रबंधन

पर्यावरण अध्ययन और आपदा प्रबंधन ऐसे क्षेत्र हैं जो प्राकृतिक और मानव-प्रेरित आपदाओं की रोकथाम, शमन, तैयारी, प्रतिक्रिया और पुनर्प्राप्ति से संबंधित हैं। आपदाएँ ऐसी घटनाएँ हैं जो पर्यावरण और समाज को गंभीर व्यवधान, क्षति और नुकसान पहुँचाती हैं। पर्यावरण अध्ययन आपदाओं के कारणों, प्रभावों और जोखिमों को समझने में मदद करता है, साथ ही उनके प्रभावों को कम करने और लचीलापन बढ़ाने के लिए रणनीतियों और नीतियों को भी समझने में मदद करता है। आपदा प्रबंधन आपदा प्रबंधन चक्र की योजना बनाने, व्यवस्थित करने, समन्वय करने और कार्यान्वित करने के लिए पर्यावरण अध्ययनों का अनुप्रयोग है।

पर्यावरण अध्ययन में पारिस्थितिकी तंत्र

पारिस्थितिकी तंत्र जीवित और निर्जीव घटकों का एक समुदाय है जो एक दूसरे और अपने पर्यावरण के साथ परस्पर क्रिया करते हैं। पारिस्थितिकी तंत्र पर्यावरण अध्ययन की संरचनात्मक और कार्यात्मक इकाई है, क्योंकि यह जैविक और अजैविक कारकों के बीच जटिल और गतिशील अंतःक्रियाओं का प्रतिनिधित्व करता है। आवास के आधार पर पारिस्थितिकी तंत्र को स्थलीय या जलीय में वर्गीकृत किया जा सकता है। पारिस्थितिकी तंत्र को इसकी विशेषताओं, जैसे इसकी उत्पादकता, विविधता, स्थिरता और लचीलापन द्वारा भी पहचाना जा सकता है। पर्यावरण अध्ययन पारिस्थितिकी तंत्र की संरचना, कार्य और परिवर्तन के साथ-साथ उनकी सेवाओं, मूल्यों और खतरों का अध्ययन करता है।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 7, July 2024 |

पर्यावरण अध्ययन की आवश्यकता

पर्यावरण अध्ययन की आवश्यकता बढ़ते पर्यावरण संकट और सतत विकास की तत्काल आवश्यकता से उत्पन्न होती है। पर्यावरण संकट की विशेषता पर्यावरण का क्षरण, प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास, जैव विविधता का नुकसान, प्रदूषण में वृद्धि, नई बीमारियों का उभरना और जलवायु परिवर्तन का खतरा है। ये पर्यावरणीय समस्याएं मानव स्वास्थ्य, सुरक्षा और समृद्धि के लिए गंभीर चुनौतियां पेश करती हैं। पर्यावरण अध्ययन इन पर्यावरणीय समस्याओं को संबोधित करने और सतत विकास प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक आधार, नैतिक ढांचा और व्यावहारिक समाधान प्रदान करता है।

पर्यावरण अध्ययन का महत्व

पर्यावरण अध्ययन वर्तमान और भविष्य के परिदृश्य में अध्ययन का एक महत्वपूर्ण और प्रासंगिक क्षेत्र है, क्योंकि यह पर्यावरण और उसके मुद्दों से संबंधित है, जो मनुष्यों और अन्य जीवित प्राणियों के कल्याण और अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण हैं। पर्यावरण अध्ययन विभिन्न लाभ और फायदे प्रदान करता है, जैसे:

- पर्यावरणीय प्रणालियों और प्रक्रियाओं, तथा मानवीय गतिविधियों और प्रणालियों के पर्यावरणीय प्रभावों और जोखिमों के बारे में पर्यावरणीय ज्ञान और जागरूकता को बढ़ाना।
- पर्यावरणीय घटकों और संकेतकों को मापने, निगरानी करने और मॉडलिंग करने तथा मानवीय गतिविधियों और प्रणालियों के पर्यावरणीय प्रभावों और जोखिमों का आकलन करने और उन्हें कम करने के लिए पर्यावरणीय कौशल और दक्षताओं का विकास करना।
- पर्यावरण और इसकी विविधता और अखंडता की सराहना और सम्मान करने तथा पर्यावरण की देखभाल और इसके संरक्षण और संवर्धन के लिए पर्यावरणीय मूल्यों और दृष्टिकोण को बढ़ावा देना।

पर्यावरण अध्ययन एक बहुविषयक और समग्र अध्ययन क्षेत्र है जो पर्यावरण और उसके मुद्दों का व्यवस्थित रूप से मानव-उन्मुख दृष्टिकोण से अध्ययन करता है। पर्यावरण अध्ययन प्राकृतिक विज्ञान, मानविकी और सामाजिक विज्ञान से ज्ञान को एकीकृत करता है ताकि पर्यावरणीय समस्याओं के कारणों, परिणामों और समाधानों को समझा, उनका विश्लेषण, मूल्यांकन और समाधान किया जा सके। पर्यावरण अध्ययन उन मूल्यों, नैतिकता और नीतियों का भी पता लगाता है जो मानव-पर्यावरण संबंध और पर्यावरण निर्णय लेने और शासन प्रक्रियाओं का मार्गदर्शन करते हैं। पर्यावरण अध्ययन एक अंतःविषय और अनुप्रयुक्त क्षेत्र है जो पर्यावरण और स्थिरता से संबंधित विभिन्न विषयों और विषयों को शामिल करता है। पर्यावरण अध्ययन अध्ययन का एक महत्वपूर्ण और प्रासंगिक क्षेत्र है जो मनुष्यों और अन्य जीवित प्राणियों के कल्याण और अस्तित्व के लिए विभिन्न लाभ और फायदे प्रदान करता है।

III. परिणाम

भारत में पर्यावरण की कई समस्या है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, कचरा, और प्राकृतिक पर्यावरण के प्रदूषण भारत के लिए चुनौतियाँ हैं। पर्यावरण की समस्या की परिस्थिति 1947 से 1995 तक बहुत ही खराब थी। 1995 से २०१० के बीच विश्व बैंक के विशेषज्ञों के अध्ययन के अनुसार, अपने पर्यावरण के मुद्दों को संबोधित करने और अपने पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार लाने में भारत दुनिया में सबसे तेजी से प्रगति कर रहा है। फिर भी, भारत विकसित अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों के स्तर तक आने में इसी तरह के पर्यावरण की गुणवत्ता तक पहुँचने के लिए एक लंबा रास्ता तय करना है।[1][2] भारत के लिए एक बड़ी चुनौती और अवसर है। पर्यावरण की समस्या का, बीमारी, स्वास्थ्य के मुद्दों और भारत के लिए लंबे समय तक आजीविका पर प्रभाव का मुख्य कारण हैं।

कारण

कुछ पर्यावरण के मुद्दों के बारे में कारण के रूप में आर्थिक विकास को उद्धृत किया है।दूसरे, आर्थिक विकास में भारत के पर्यावरण प्रबंधन में सुधार लाने और देश के प्रदूषण को रोकने के लिए महत्वपूर्ण है विश्वास करते हैं।बढ़ती जनसंख्या भारत के पर्यावरण क्षरण का प्राथमिक कारण भी है ऐसा सुझाव दिया गया है।व्यवस्थित अध्ययन में इस सिद्धांत को चुनौती दी गई है[19,20] तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या व आर्थिक विकास और शहरीकरण व औद्योगीकरण में अनियंत्रित वृद्धि, बड़े पैमाने पर औद्योगीक विस्तार तथा तीव्रीकरण, तथा जंगलों का नष्ट होना इत्यादि भारत में पर्यावरण संबंधी समस्याओं के प्रमुख कारण हैं।

प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दों में वन और कृषि-भूमिक्षरण, संसाधन रिक्तीकरण (पानी, खनिज, वन, रेत, पत्थर आदि), पर्यावरण क्षरण, सार्वजनिक स्वास्थ्य, जैव विविधता में कमी, पारिस्थितिकी प्रणालियों में लचीलेपन की कमी, गरीबों के लिए आजीविका सुरक्षा शामिल हैं।[3]

यह अनुमान है कि देश की जनसंख्या वर्ष 2018 तक 1.26 अरब तक बढ़ जाएगी. अनुमानित जनसंख्या का संकेत है कि 2050 तक भारत दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला देश होगा और चीन का स्थान दूसरा होगा। [4] दुनिया के कुल क्षेत्रफल का 2.4% परन्तु विश्व की जनसंख्या का 17.5% धारण कर भारत का अपने प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव काफी बढ़ गया है। कई क्षेत्रों पर पानी की कमी, मिट्टी का कटाव और कमी, वनों की कटाई, वायु और जल प्रदूषण के कारण बुरा असर पड़ता है।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 7, July 2024 |

प्रमुख समस्यायें

भारत की पर्यावरणीय समस्याओं में विभिन्न प्राकृतिक खतरे, विशेष रूप से चक्रवात और वार्षिक मानसून बाढ़, जनसंख्या वृद्धि, बढ़ती हुई व्यक्तिगत खपत, औद्योगीकरण, ढांचागत विकास, घटिया कृषि पद्धतियां और संसाधनों का असमान वितरण हैं और इनके कारण भारत के प्राकृतिक वातावरण में अत्यधिक मानवीय परिवर्तन हो रहा है। एक अनुमान के अनुसार खेती योग्य भूमि का 60% भूमि कटाव, जलभराव और लवणता से ग्रस्त है। यह भी अनुमान है कि मिट्टी की ऊपरी परत में से प्रतिवर्ष 4.7 से 12 अरब टन मिट्टी कटाव के कारण खो रही है। 1947 से 2002 के बीच, पानी की औसत वार्षिक उपलब्धता प्रति व्यक्ति 70% कम होकर 1822 घन मीटर रह गयी है तथा भूगर्भ जल का अत्यधिक दोहन हरियाणा, पंजाब व उत्तर प्रदेश में एक समस्या का रूप ले चुका है। भारत में वन क्षेत्र इसके भौगोलिक क्षेत्र का 18.34% (637,000 वर्ग किमी) है। देश भर के वनों के लगभग आधे मध्य प्रदेश (20.7%) और पूर्वोत्तर के सात प्रदेशों (25.7%) में पाए जाते हैं; इनमें से पूर्वोत्तर राज्यों के वन तेजी से नष्ट हो रहे हैं। वनों की कटाई ईंधन के लिए लकड़ी और कृषि भूमि के विस्तार के लिए हो रही है। यह प्रचलन औद्योगिक और मोटर वाहन प्रदूषण के साथ मिल कर वातावरण का तापमान बढ़ा देता है जिसकी वजह से वर्षण का स्वरुप बदल जाता है और अकाल की आवृत्ति बढ़ जाती है।

पार्वती स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान का अनुमान है कि तापमान में 3 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि सालाना गेहूं की पैदावार में 15-20% की कमी कर देगी. एक ऐसे राष्ट्र के लिए, जिसकी आबादी का बहुत बड़ा भाग मूलभूत स्रोतों की उत्पादकता पर निर्भर रहता हो और जिसका आर्थिक विकास बड़े पैमाने पर औद्योगिक विकास पर निर्भर हो, ये बहुत बड़ी समस्याएं हैं। पूर्वी और पूर्वोत्तर राज्यों में हो रहे नागरिक संघर्ष में प्राकृतिक संसाधनों के मुद्दे शामिल हैं - सबसे विशेष रूप से वन और कृषि योग्य भूमि.
जंगल और जमीन की कृषि गिरावट, संसाधनों की कमी (पानी, खनिज, वन, रेत, पत्थर आदि),पर्यावरण क्षरण, सार्वजनिक स्वास्थ्य, जैव विविधता के नुकसान, पारिस्थितिकी प्रणालियों में लचीलेपन की कमी है, गरीबों के लिए आजीविका सुरक्षा है। भारत में प्रदूषण का प्रमुख स्रोत ऐसी ऊर्जा का प्राथमिक स्रोत के रूप में पशुओं से सूखे कचरे के रूप में फ्युलवुड और बायोमास का बड़े पैमाने पर जलना, संगठित कचरा और कचरे को हटाने सेवाओं की एसीके, मलजल उपचार के संचालन की कमी, बाढ़ नियंत्रण और मानसून पानी की निकासी प्रणाली, नदियों में उपभोक्ता कचरे के मोड़, प्रमुख नदियों के पास दाह संस्कार प्रथाओं की कमी है, सरकार अत्यधिक पुराना सार्वजनिक परिवहन प्रदूषण की सुरक्षा अनिवार्य है, और जारी रखा 1950-1980 के बीच बनाया सरकार के स्वामित्व वाले, उच्च उत्सर्जन पौधों की भारत सरकार द्वारा आपरेशन है।

वायु प्रदूषण, गरीब कचरे का प्रबंधन, बढ़ रही पानी की कमी, गिरते भूजल टेबल, जल प्रदूषण, संरक्षण और वनों की गुणवत्ता, जैव विविधता के नुकसान, और भूमि / मिट्टी का क्षरण प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दों में से कुछ भारत की प्रमुख समस्या है। भारत की जनसंख्या वृद्धि पर्यावरण के मुद्दों और अपने संसाधनों के लिए दबाव समस्या बढ़ाते है।

जल प्रदूषण

भारत के 3,119 शहरों व कस्बों में से 209 में आंशिक रूप से तथा केवल 8 में मलजल को पूर्ण रूप से उपचारित करने की सुविधा (डब्ल्यू.एच.ओ. 1992) है।[5] 114 शहरों में अनुपचारित नाली का पानी तथा दाह संस्कार के बाद अधजले शरीर सीधे ही गंगा नदी में बहा दिए जाते हैं।[6] अनुप्रवाह में नीचे की ओर, अनुपचारित पानी को पीने, नहाने और कपड़े धोने के लिए प्रयोग किया जाता है। यह स्थिति भारत और साथ ही भारत में खुले में शौच काफी आम है, यहां तक कि शहरी क्षेत्रों में भी.[7][8]

जल संसाधनों को इसीलिए घरेलू या अंतर्राष्ट्रीय हिंसक संघर्ष से नहीं जोड़ा गया है जैसा कि पहले कुछ पर्यवेक्षकों द्वारा अनुमानित था। इसके कुछ संभावित अपवादों में कावेरी नदी के जल वितरण से सम्बंधित जातिगत हिंसा तथा इससे जुड़ा राजनैतिक तनाव जिसमें वास्तविक और संभावित जनसमूह जो कि बांध परियोजनाओं के कारण विस्थापित होते हैं, विशेषकर नर्मदा नदी पर बनने वाली ऐसी परियोजनाएं शामिल हैं।[9] आज पंजाब प्रदूषण के पनपने का एक संभावित स्थान है, उदाहरण के लिए बुड्ढा नुल्ला नाम की एक छोटी नदी जो पंजाब, भारत के मालवा क्षेत्र से है, यह लुधियाना जिले जैसी घनी आबादी वाले क्षेत्र से होकर आती है और फिर सतलज नदी, जो कि सिन्धु नदी की सहायक नदी है, में मिल जाती है, हाल की शोधों के अनुसार यह इंगित किया गया है कि एक बार और भोपाल जैसी परिस्थितियां बनने वाली हैं।[10] 2008 में पीजीआईएमईआर और पंजाब प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा किये गए संयुक्त अध्ययन से पता चला कि नुल्ला के आस पास के जिलों में भूमिगत जल तथा नल के पानी में स्वीकृत सीमा (एमपीएल) से कहीं अधिक मात्रा में कैल्शियम, मैग्नीशियम, फ्लोराइड, मरकरी तथा बीटा-एंडोसल्फान व हेप्टाक्लोर जैसे कीटनाशक पाए गए। इसके अलावा पानी में सीओडी तथा बीओडी (रासायनिक व जैवरासायनिक ऑक्सीजन की मांग), अमोनिया, फॉस्फेट, क्लोराइड, क्रोमियम व आर्सेनिक तथा क्लोरपायरीफौस जैसे कीटनाशक भी अधिक सांद्रता में थे। भूमिगत जल में भी निकल व सेलेनियम पाए गए और नल के पानी में सीसा, निकल और कैडमियम की उच्च सांद्रता मिली।[11]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 7, July 2024 |

मुंबई नगर से होकर बहने वाली मीठी नदी भी बहुत प्रदूषित है।

गंगा

प्रदूषित गंगा नदी पर लाखों निर्भर करते हैं।

गंगा नदी के किनारे 40 करोड़ से भी अधिक लोग रहते हैं। हिन्दुओं के द्वारा पवित्र मानी जाने वाली इस नदी में लगभग 2,000,000 लोग नियमित रूप से धार्मिक आस्था के कारण स्नान करते हैं। हिन्दू धर्म में कहा जाता है कि यह नदी भगवन विष्णु के कमल चरणों से (वैष्णवों की मान्यता) अथवा शिव की जटाओं से (शैवों की मान्यता) बहती है। आध्यात्मिक और धार्मिक महत्व के लिए इस नदी की तुलना प्राचीन मिस्र वासियों के नील नदी से की जा सकती है। जबकि गंगा को पवित्र माना जाता है, वहीं इसके पारिस्थितिकी तंत्र से संबंधित कुछ समस्याएं भी हैं। यह रासायनिक कचरे, नाली के पानी और मानव व पशुओं की लाशों के अवशेषों से भरी हुई है और इसमें सीधे नहाना (उदाहरण के लिए बिल्हारज़ियासिस संक्रमण) अथवा इसका जल पीना (फेकल-मौखिक मार्ग से) प्रत्यक्ष रूप से खतरनाक है।

यमुना

पवित्र यमुना नदी को न्यूज़ वीक द्वारा "काले कीचड़ की बदबूदार पट्टी" कहा गया जिसमें फेकल जीवाणु की संख्या सुरक्षित सीमा से 10,000 गुणा अधिक पायी गयी और ऐसा इस समस्या के समाधान हेतु 15 वर्षीय कार्यक्रम के बाद है।[12] हैजा महामारी से कोई अपरिचित नहीं है।[12]

वायु प्रदूषण

भारतीय शहरों में वायु प्रदूषण उच्च है।

भारतीय शहर वाहनों और उद्योगों के उत्सर्जन से प्रदूषित हैं। सड़क पर वाहनों के कारण उड़ने वाली धूल भी वायु प्रदूषण में 33% तक का योगदान करती है।[13]बंगलुरु जैसे शहर में लगभग 50% बच्चे अस्थमा से पीड़ित हैं।[14] भारत में 2005 के बाद से वाहनों के लिए भारत स्टेज दो (यूरो II) के उत्सर्जन मानक लागू हैं।[15]

भारत में वायु प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण परिवहन की व्यवस्था है। लाखों पुराने डीज़ल इंजन वह डीज़ल जला रहे हैं जिसमें यूरोपीय डीज़ल से 150 से 190 गुणा अधिक गंधक उपस्थित है। बेशक सबसे बड़ी समस्या बड़े शहरों में है जहां इन वाहनों का घनत्व बहुत अधिक है। सकारात्मक पक्ष पर, सरकार इस बड़ी समस्या और लोगों से संबद्ध स्वास्थ्य जोखिमों पर प्रतिक्रिया करते हुए धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से कदम उठा रही है। पहली बार 2001 में यह निर्णय लिया गया कि सम्पूर्ण सार्वजनिक यातायात प्रणाली, ट्रेनों को छोड़ कर, कंप्रेस्ड गैस (सीपीजी) पर चलने लायक बनायी जाएगी. विद्युत् चालित रिक्शा डिज़ाइन किया जा रहा है और

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 7, July 2024 |

सरकार द्वारा इसपर रियायत भी दी जाएगी परन्तु दिल्ली में साइकिल रिक्शा पर प्रतिबन्ध है और इसके कारण वहां यातायात के अन्य माध्यमों पर निर्भरता होगी, मुख्य रूप से इंजन वाले वाहनों पर.

यह भी प्रकट हुआ है कि अत्यधिक प्रदूषण से ताजमहल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा था। अदालत द्वारा इस क्षेत्र में सभी प्रकार के वाहनों पर रोक लगाये जाने के पश्चात इस इलाके की सभी औद्योगिक इकाइयों को भी बंद कर दिया गया। बड़े शहरों में वायु प्रदूषण इस कदर बढ़ रहा है कि अब यह विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा दिए गए मानक से लगभग 2.3 गुना तक हो चुका है।[16] (सविता सेठी द्वारा लिखित दाह संस्कार द्वारा प्रदूषण, पर्यावरण संरक्षण न्यास 2005 द्वारा प्रकाशित)

ध्वनि प्रदूषण
भारत के सर्वोच्च न्यायलय द्वारा ध्वनि प्रदूषण पर एक महत्वपूर्ण फैसला सुनाया गया।[17] वाहनों के हॉर्न की आवाज शहरों में शोर के डेसिबिल स्तर को अनावश्यक रूप से बढ़ा देती है। राजनैतिक कारणों से तथा मंदिरों व मस्जिदों में लाउडस्पीकर का प्रयोग रिहायशी इलाकों में ध्वनि प्रदूषण के स्तर को बढाता है।

हाल ही में भारत सरकार ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में ध्वनि स्तर के मानदंडों को स्वीकृत किया है।[18] इनकी निगरानी व क्रियान्वन कैसे होगा यह अभी भी सुनिश्चित नहीं है।

भूमि प्रदूषण
भारत में भूमि प्रदूषण कीटनाशकों और उर्वरकों के साथ-साथ क्षरण की वजह से हो रहा है।[19] मार्च 2009 में पंजाब में युरेनियम विषाक्तता का मामला प्रकाश में आया, इसका कारण ताप विद्युत् गृहों द्वारा बनाये गए राख के तालाब थे, इनसे पंजाब के फरीदकोट तथा भटिंडा जिलों में बच्चों में गंभीर जन्मजात विकार पाए गए।[20][21][22][23]

जनसंख्या वृद्धि और पर्यावरण की गुणवत्ता
जनसंख्या वृद्धि और पर्यावरण के बीच बातचीत के बारे में अध्ययन और बहस का एक लंबा इतिहास है। एक ब्रिटिश विचारक माल्थस के अनुसार, उदाहरण के लिए, एक बढ़ती हुई जनसंख्या पर्यावरण क्षरण के कारण, और गरीब गुणवत्ता के रूप में के रूप में अच्छी तरह से गरीब की भूमि की खेती के लिए मजबूर कर रहा, कृषि भूमि पर दबाव डाल रही है।यह पर्यावरण क्षरण अंततः, कृषि पैदावार और खाद्य पदार्थों की उपलब्धता को कम कर देता है, जिससे जनसंख्या वृद्धि की दर को कम करने, अकाल और रोगों और मृत्यु का कारण बनता है [24]। यह पर्यावरण की क्षमता पर दबाव डाल सकता है जनसंख्या वृद्धि ने भी हवा, पानी, और ठोस अपशिष्ट प्रदूषण का एक प्रमुख कारण के रूप में देखा जाता है।[25]

पर्यावरण के समस्या और भारतीय कानून
1980 के दशक के बाद से, भारत के सर्वोच्च न्यायालय समर्थक सक्रिय रूप से भारत के पर्यावरण के मुद्दों में लगा हुआ है।भारत के उच्चतम न्यायालय की व्याख्या और सीधे पर्यावरण न्यायशास्त्र में नए परिवर्तन शुरू करने में लगा हुआ है। न्यायालय के निर्देशों और निर्णय की एक श्रृंखला के माध्यम से मौजूदा वालों पर अतिरिक्त शक्तियां, पर्यावरण कानूनों को फिर से व्याख्या की है, पर्यावरण की रक्षा के लिए नए संस्थानों और संरचनाओं नए सिद्धांतों बनाया नीचे रखी है, और नवाजा गया है। पर्यावरण के मुद्दों पर जनहित याचिका और न्यायिक सक्रियता भारत के सुप्रीम कोर्ट से परे फैली हुई है। यह अलग-अलग राज्यों के उच्च न्यायालयों में शामिल हैं। [26][27]

IV. निष्कर्ष

संरक्षण
खराब वायु गुणवत्ता, जल प्रदूषण और कचरे के प्रदूषण - सभी पारिस्थितिक तंत्र के लिए आवश्यक खाद्य और पर्यावरण की गुणवत्ता प्रभावित करते हैं। भारतीय जंगलों वन वनस्पति की विविधता और वितरण बड़ी है।[28]

भारत, जो कि इंडोमलय पारिस्थितिकी क्षेत्र के अंतर्गत आता है, एक महत्वपूर्ण जैव-विविधता वाला क्षेत्र है; यहां सभी स्तनपाइयों में से 7.6%, सभी पक्षियों में से 12.6%, सभी सरीसृपों में से 6.2% तथा फूलदार पौधों में से 6.0% प्रजातियां पायी जाती है।[29]

हाल के दशकों में, मानव अतिक्रमण के कारण भारतीय वन्यजीवन के समक्ष खतरा पैदा हो गया है; इसकी प्रतिक्रियास्वरूप, 1935 में स्थापित राष्ट्रीय पार्कों व संरक्षित क्षेत्रों की प्रणाली को बड़ी मात्रा में बढाया गया है। 1972 में, भारत ने वन्यजीव संरक्षण अधिनियम और प्रोजेक्ट टाइगर को अधिनियमित करके संकटग्रस्त प्राकृतिक आवासों को बचाने का प्रयास आरंभ किया; कई अन्य संघीय संरक्षण 1980 से प्रकाश में आये हैं। 500 से अधिक वन्यजीव सेंचुरियों के अतिरिक्त, भारत में 14 रक्षित जीवमंडल क्षेत्र हैं जिसमें से चार रक्षित जीवमंडल क्षेत्र की अंतर्राष्ट्रीय श्रृंखला के भाग हैं; 25 जलक्षेत्र रामसर कन्वेंशन के अंतर्गत रजिस्ट्रीकृत हैं।[20]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.802 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 11, Issue 7, July 2024 |

संदर्भ

1. मैकएचेर्न और तुर्केल 2009 , पृ. xii.
2. ↑ वर्स्टर 1988 , पृ. 293.
3. ^ [ए बी]यहाँ जाएं: ग्रोव 1994 .
4. ↑ नैश 1970 , पृ. 249-260.
5. ↑ नैश 1972 , पृ. 362.
6. ^ "सैमुअल पी. हेस ऑन नेशनल फॉरेस्ट्स एंड इकोलॉजी" . भविष्य के लिए इतिहास . पिट्सबर्ग: WRCT . मूल से 26 अप्रैल 2012 को संग्रहीत.
7. ^ गैम्बिनो, मेगन (4 अक्टूबर 2011)। "अल्फ्रेड डब्ल्यू. क्रॉस्बी ऑन द कोलंबियन एक्सचेंज" . smithsonianmag.com . स्मिथसोनियन . 10 फरवरी 2015 को लिया गया .
8. ^ [ए बी]यहाँ जाएं: मैकनील 2003 , पृ. 5–43
9. ^ व्हाइट 1985 .
10. ^ ह्यूजेस 2006 .
11. ↑ डोवर्स 1994 , पृ. 4.
12. ↑ वर्स्टर 1988 , पृ. 289.
13. ↑ [ए बी सी]यहाँ जाएं: ह्यूजेस 2001 , पृष्ठ 4
14. ↑ ह्यूजेस 2006 , पृ. 1.
15. ↑ [ए बी सी]यहाँ जाएं: वर्स्टर 1988 , पृ. 290
16. ↑ वर्स्टर 1988 , पृ. 292.
17. ↑ वर्स्टर 1993 , पृ. 20.
18. ^ [ए बी]यहाँ जाएं: वर्स्टर 1988 , पृष्ठ 306
19. ↑ डोवर्स 1994 , पृ. 5.
20. ↑ [ए बी]यहाँ जाएं: ह्यूजेस 2008 , पृष्ठ 8

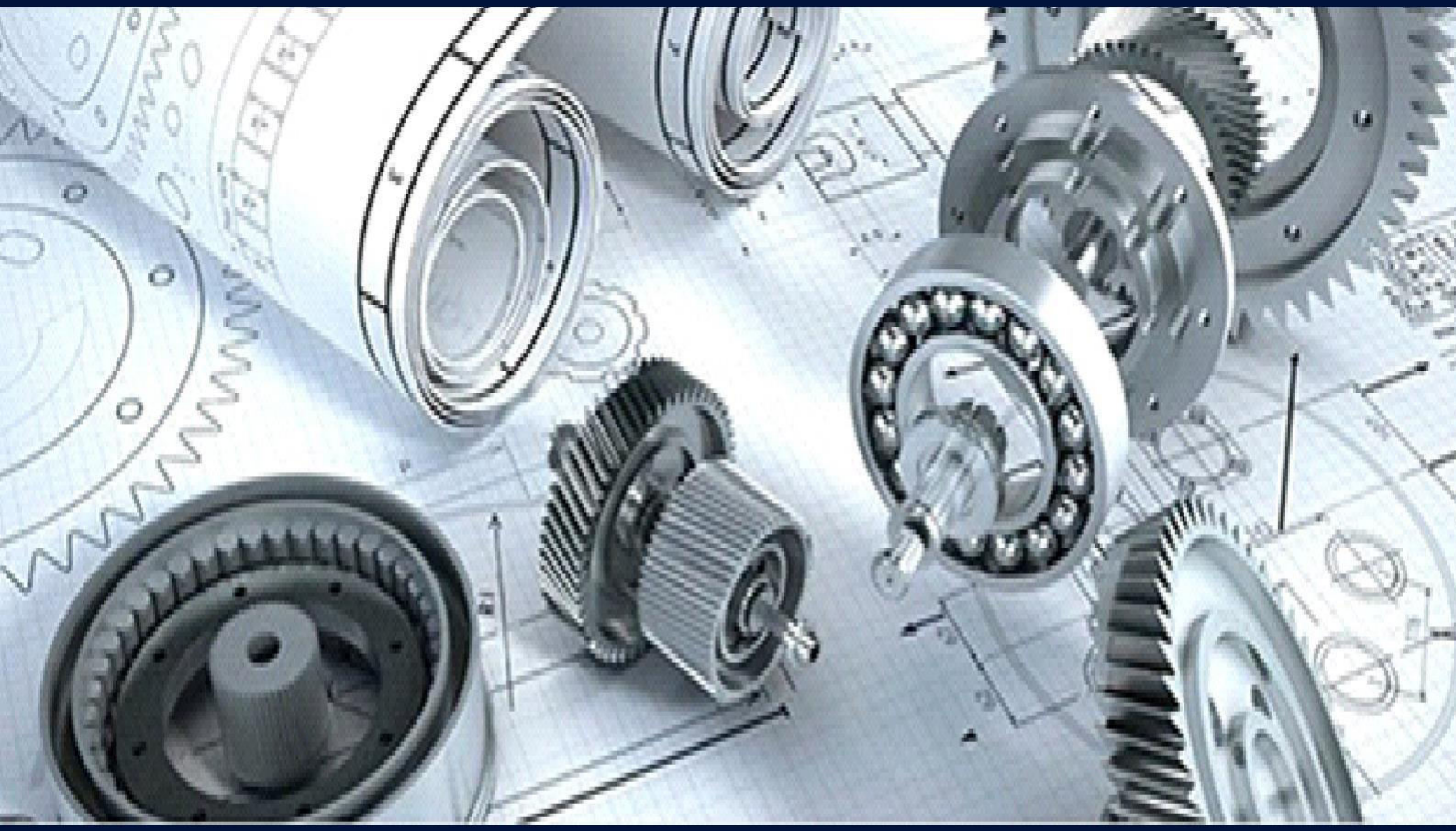

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com